सं० श्रो० वि०/यमुना/83-86/27318.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि में० डेन्सन इंजिनियरज (यमुना गैसिज यूनिट सरदाना नगर), श्रम्वाला रोड़, जगाधरी, के श्रमिक श्री श्रशोध कुमार, सपुत श्री शिव राम मार्फत डा० सुरेन्द्र कुमार शर्मा, इन्टक, श्राफिस, धमंशाल ब्राह्मण, रेलवे रोड़, जगाधरी तथा उसके, प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में क्रोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं०-3(44)84-3-अम दिनांक 18 ग्रिपेल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की घारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्वाला को विवादगस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री अशोक कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो शिव | यमुना | 84-86 | 273 24 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं इंन्सन इजिनियरज (यमुना गैसिज यूनिट सरदाना नगर), ग्रम्बाला रोड़, जगाधरी के श्रीमिक श्री हैम राज पुत्र श्री विश्वन दास मार्फत डा० सुरेन्द्र कुमार शर्मा, इंटक ग्राफिन, ग्राह्मण धर्मेशाला, रेलवे रोड़, जगाधरी तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीहोगिक विवाद है;

ग्रौर चुंकि इरियाणा के राज्यात विवाद को न्यायनिर्मय हेनु निर्दिश्य करता वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रन्न, ग्रोद्योगिक विनाद ग्रिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की नई शिक्तियों का प्रयोग करने हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रिजेल, 1984, द्वारा उनत श्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिजीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादेगस्त या उससे सुमंगत या उसने सम्बन्धित नीने लिखा मामता न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उन्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामता है या उन्त विनाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री हैम राज की सेवाभ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं ग्रो० वि०/यमुना/88-86/27330.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. डैन्सन इंजिनियरज (यमुन, गैंसिज यूनिट सरदाता) नगर अम्बाला रोड़, जगाधरी के श्रीमक श्री वाल किशन यादव पुत्र श्री राम मिलन यादव मार्फत डा० सुरेन्द्र कुमार शर्मा इन्टक आफिस द्वाहमण धर्मशाला रेलवे रोड़, जगाधरी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है;

भ्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रीद्यनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 3(44)84—3—श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 द्वेउरा उक्य ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिश्चीन गठित श्रम न्यायालय, श्रुन्वाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला व्यायनिर्णय एवं पंचाटतीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तया श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री बाल किशन यादव की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? सं. मो.वि./यमुना/85-86/27337.--चंकि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि में. जैन्सन इजिनियरज (यमुना गैसिज यूनिट सरदाना नगर), अम्बाला रोड़, जगाधरी, के श्रीमक श्री जोगिन्द्रसिंह, पुत्र श्री सरदारा राम, मार्फत डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मी इन्टक आफिस ब्राहमण धर्नशाला रेलवे रोड़, जगाधरी, तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चंकि हरियाणा के राज्यपास विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रब, भौद्योगिक विवाद श्रिष्ठितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 3 (44) 84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त श्रीधसूचना की धारा 7 के श्रिष्ठीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिषक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है आ उक्त विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री जोगिन्द्र सिंह, की सेवाओं का समापन न्यागीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहुत का हकदार है?